International Journal of Applied Research 2016; 2(1): 338-340

**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 5.2
IJAR 2016; 2(1): 338-340
www.allresearchjournal.com
Received: 02-11-2015
Accepted: 05-12-2015

**सुमन**
सहायक प्रवक्ता, हिन्दी विभाग
डी•ए•वी• कॉलेज अबोहर,

**Correspondence**
**सुमन**
सहायक प्रवक्ता, हिन्दी विभाग
डी•ए•वी• कॉलेज अबोहर,

# गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित हिन्दी नाटक

## सुमन

कहते है कि जब–जब समाज पर विपदा एवं अधर्म के बादल गहरा जाते हैं तो कोई महान पुरूष उत्पन्न होता है और वह समाज को एक नई आशा और नव्य पथ दिखाता है। यही बात हम हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के लिए कह सकते है क्योंकि उनका आगमन तब हुआ जब भारत ही नहीं अपितु अधिकांश विश्व पीड़ा एवं विषमता से ग्रसित था। उन्होनें अपनी सत्य व अहिंसा की यात्रा अकेले शुरू की थी किन्तु आहिस्ता–आहिस्ता समस्त भारत ही उनके आदर्शों से प्रभावित होकर उनका अनुयायी बन गया और अपने कर्त्तव्य के प्रति सजग हो कर सत्य पथ का अनुगमन करने लगा। आज चाहे बापू हमारे बीच में नहीं है किन्तु उनके विचारों की महत्ता आज भी बनी हुई है या यूँ कहें कि उनके आदर्शों तथा विचारधारा की प्रासांगिकता वर्तमान युग में अधिक बढ़ गयी है। आज के विश्व स्तर पर फैले व्याभिचार, अनाचार एवं अहिंसा के विकराल रूप को देख कर मानव जाति के अस्तित्व की चिन्ता होती है। जिसके कारण आज सम्पूर्ण विश्व उनके सत्याग्रह एवं अहिंसा के मार्ग को अपनाने की प्रेरणा ले रहा है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण अमेरिकी पत्रिका 'टाइम' ने भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान हुए महात्मा गांधी की अगुवाई वाले नमक सत्याग्रह को दुनिया के सर्वाधिक दस प्रभावशाली आन्दोलनों में शुमार किया है। यहां तक कि विश्व के सर्वशक्तिशाली देश के राष्ट्रपति बाराक ओबामा ने वह्राइट हाउस में अफ्रिकी महाद्वीप के 50 देशों के युवा नेताओं को सम्बोधित करते हुए गांधी जी के अहिंसा तथा सत्य में आस्था जैसे विचारों से प्रेरणा लेने को कहा है। गांधी जी की मुक्तकंठ से प्रशांसा भी की जो उनकी विचारधारा को विश्व स्वीकार्यता प्रदान कर रहा है। दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही अहिंसा, अनाचार, खून–खराबा, आंतकी हमलों ने सारे संसार को ही दहला दिया है। जिस से चारों तरफ अशांति और दुविधा का वातावरण पैदा हो गया है। इस लिए एक बार फिर उस अहिंसा के मसीहे के आदर्शों को अपनाया जा रहा है। महात्मा गांधी जिनका वास्तविक नाम करमचन्द गांधी था ने एक छोटे से गाँव से चलकर सम्पूर्ण विश्व तक को अपने विचारों तथा आदर्शों से आंका। जिसके ह्रदय में अथाह ममता व करूणा का सागर था और समस्त मानव जाति के भले के लिए हिलोरे मार रहा था, जिसे सब का दर्द ,सब की तकलीफें अपनी सी लगती थीं। जो दूसरों के रोने पर रोने लगता, किसी को दुःख में देखकर बेचैन हो जाता और उसे दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहता। वह एक प्रभावशाली व्यक्तित्व के साथ इस धरती पर अवतरित हुए। उन्हेंने समाज में फैले भेदभाव तथा लिंग भेद को खत्म करने के लिए बहुत प्रयास किये तथा कष्ट भी उठाये। जब वह वकालत की पढ़ई करने के लिए अफ्रीका गये तो वहाँ भी उन्होंने रंगभेद के विरूद्ध आन्दोलन शुरू किया और लोगों को न्याय दिलाने का प्रयास किया। गांधी जी ने देश के स्वतन्त्रता संग्राम को परिणाम तक पहुँचाया। इस यात्रा में उनको अनन्य कष्टों को सहन करना पड़ा। किन्तु उन्होंने अपने शांति तथा सत्य के पथ को त्यागा नहीं बल्कि एक नव्य उत्साह से उस पर चलते गये। गांधी जी के विचारों का प्रभाव केवल एक क्षेत्र में ही नहीं दिखई देता अपितु जीवन के प्रत्येक पक्ष पर दिखता है फिर चाहे वह सामाजिक, राजनीतिक, धर्मिक या फिर साहित्यिक ही क्यों न हो, उनका अप्रति प्रभाव नज़र आता है। साहित्य के क्षेत्र में तो उनके विचारों को विभिन्न रूप से वाणी प्राप्त हुई है। केवल भारतीय साहित्य ही नहीं बल्कि विश्व साहित्य में भी गांधीवादी विचारधारा की गहरी झलक देखी जा सकती है। भारत में प्रत्येक भाषा के साहित्य में गांधी जी के आदर्शों को अनुभव किया जा सकता है। वस्तुतः हिन्दी साहित्य भी उनके सत्य, अहिंसा, निष्ठा, देश भक्ति जैसे अदभूत गुणों से अछूता नहीं है। हिन्दी साहित्य में गांधीवादी विचारधारा से लिप्त साहित्य मुख्य रूप से देखा जा सकता है। सिर्फ काव्य क्षेत्र में ही नहीं किन्तु गद्य के क्षेत्र भी उनके विचारों को वाणी मिली, नव्य रूप प्रप्त हुआ, जो नव युवकों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बना। हिन्दी नाटकों में भी इनके विचारों का खुल कर वर्णन हुआ है। आज के संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के कारण समूचा जीवन ही नाटकीय एवं समस्यामूलक बन गया है। स्थिति की विषमता से आज जीवन के चारों और घटनाओं एवं समस्याओं का आवरण होता जा रहा है। जिन्दगी की भागदौड़ ने जीवन को कुण्ठित

एवं हिंसात्मक बना दिया है। मानव अभाव तथा अशांति में विचलित हो रहा है। जिसमें शांति तथा अंहिसा की आवश्यकता है। यही परिस्थितियाँ शताब्दियों के बाद भी गांधी जी के सद्विचारों को आधुनिक युग में भी प्रासांगिकता प्रदान करती है। हिन्दी साहित्य में गांधीवादी विचारधारा विशाल रूप में अविरल गति से प्रवाहमान हुई है और हो रही है।

हिन्दी के अनेकों नाटकों में उनके उच्चादर्शों का आवरण हुआ है तथा उन समस्याओं को उभारा गया है जिन से महात्मा गांधी जी ने जीवन भर संघर्ष किया, उन्हें दूर करने के लिए। चाहे वह दलितोद्धार, गरीबी, बेरूजगारी, विधवा समस्या, अहिंसा आदि किसी ना किसी रूप में गांधीत्व का प्रभाव गहन तरीके से प्रक्ट हुआ। इसके अन्तगर्त रामेश्वरी प्रसाद राम का नाटक 'अछूतोद्धार' उल्लेखनीय है। इस नाटक के नायक सुरेन्द्र नामक पात्र द्वारा दलित चेतना का जो एक नवीन द्वार खोला है वह वर्तमान समय की परिवर्तनीय मांग है, जिसे गांधीवादी विचारों का समर्थन प्राप्त है। इस नाटक का नायक स्वयं सवर्ण होकर भी दलितों की सहायता करने को उत्सुक है। उसका गाँव के मुखिया तथा पण्ड़ितों के साथ संघर्ष होता है। गांधी जी ने सत्य, अहिंसा के पश्चात जिस महत्त्वपूर्ण सामाजिक पहल को उठाया है वह है अछूतोद्धार। उन्होनें इन्हें 'हरिजन' की उपाधी दी है। इस नाटक में मिल–मालिकों तथा मजदूरों का संघर्ष व्यापक रूप में दिखाया गया है। इसमें यह चित्रित किया गया है कि वर्ग संघर्ष के कारण पूँजीपतियों एवं श्रमवादियों दोनों का नाश हो जायेगा। बल्कि दोनों को सद्भाव से इस समस्या का समाधान करना चाहिए। रामेश्वरी प्रसाद ने इस विषय को उठाकर समाज में गांधी विचारों के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। जयशंकर प्रसाद के नाटक 'कामना'(1932) में भी दिखाया गया है कि किस प्रकार व्यक्ति आकांक्षाओं तथा इच्छाओं में घिरने के कारण असन्तोष तथा मृगतृष्णा को प्राप्त हो जाता है। इस नाटक में फूलों का एक द्वीप है। जिसमें अभी मानव की सामाजिक वृतियों का सूत्रपात हो रहा है। वहाँ जो थोड़े से जो लोग है, उनमें आकांक्षा का अभाव और संघर्ष तो लैश मात्र भी नहीं है। किन्तु एक दिन कामना का मिलन विलास से होता है और वह अपने पति सन्तोष से विछिन्न हो जाती है। विलास वहाँ के लोगों में सांसारिकता का प्रवेश कराने का निश्चय करता है। जिससे समस्त द्वीपवासियों में अहिकता, विलास तथा नित्य नवीन आवश्यकताओं की वृद्धि होने लगती है। उनकी अपनी प्राचीन संस्कृति विलुप्त होने लगती है। नवीन सभ्यता के नाम पर हाहाकार, युद्ध, दारिद्रता, कुविचार का प्रसार होने लगता है। अन्त में कामना की आँखें खुलती हैं तथा उसका सन्तोष के साथ पुनःमिलन होता है। विलास तथा लालसा को द्वीप से बाहर कर दिया जाता है। यहाँ पर गांधी जी के सन्तोष तथा सद्भावों जैसे अनमोल आदर्शों का प्रतिपादन हुआा है कि यदि व्यक्ति मन में अधिक इच्छाएँ रखेगा तो वह हमेशा कष्ट उठाता रहेगा।

वस्तुतः गांधी का हरिजनोद्धार अन्दोलन अनेक नाटकों की समस्या विषय बन गया है। इस धारा के नाटकों में 'नेत्रोन्मूलन'(मिश्रबन्धु), जवानी की भूल, हिन्द कन्या(जमनादास महरा), प्रेम की वेदी(प्रेमचन्द), अछूत, आत्मात्याग(आनन्दी प्रसाद श्रीवास्तव), मणिगोस्वामी(कपानाथ मिश्रा) तथा 'समाज' उललेखनीय है। 'प्रेम की वेदी'(1933) में प्रमुख समस्या विवाह की हैं। ग्रेजुएट कुमारी जनी योगराज(हिन्दू) से शादी करना चाहती है। धर्म उनकी इच्छा पूर्ति में बाधक है। नाटककार ने नायिका जनी के माध्यम से धार्मिक रूढ़ियों के प्रति विद्रोह व्यक्त किया है,''लोगों ने तरह–तरह के मत बना कर संसार में कितना विष फैलाया है, कितनी आग लगाई है, कितना द्वेष फैलाया है। क्या धर्म इसलिए आया है कि आदमियों की अलग–अलग टोलियाँ बनाकर उसमें भेदभाव भर दे? ऐसा धर्म लटरों का हो सकता है, स्वार्थियों का हो सकता है, भूखों का हो सकता है, ईश्वर का नहीं हो सकता।'' पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव हेतु नारी की सामाजिक स्थिति बदल गयी है। वह अब दासी और भोग्य नहीं, सहचरी है। वह अब सामानाधिकार चाहती है। परन्तु जब जनी को यह ज्ञात होता है कि योगराज की पत्नी की मृत्यु योगराज की अधिक कामुकता की वजह से हुई है तो वह उससे शादी का प्रस्ताव ठुकरा देती है। वह धार्मिक बन्धनों की तुच्छता एवं नारी स्वातान्त्र्य की घोषणा करती हुई कहती है, ''आज मैं इन सारे ढकोसलों को, सारे बनावटी बन्धनों को प्रेम की वेदी पर न्यौछावर करती हूँ।'' इस प्रकार नाटककार ने प्रेम का आदर्श प्रस्तुत करते हुए सच्चे प्रेम की विज्य दिखाई है। नाटककार ने गांधी जी के नारी स्वातान्त्र्य के उद्गार को अधिक बलपूर्वक प्रक्ट किया है। प्रेम की वास्तविक परिभाषा समर्पण, त्याग तथा पवित्रता है जो इस नाटक में पूर्णतः उभर कर सामने आई है। स्त्री की स्वतन्त्रता की समस्या को लेकर लिखा गया नाटक 'ठहरा हुआ पानी' (शांति महरोत्रा 1934) भी नारी के बन्धक एवं कशमकश भरे जीवन का चित्र है कि वह उस पक्षी के समान है जो पिंजरे को चोंच मार–मार कर अपने को ही आहत करता रहता है किन्तु अवसर मिलने पर भी उड़कर कहीं नहीं जाता और स्वयं के लिए खुले द्वार को ही बन्द कर लेता है।

हरिकृष्ण प्रेमी द्वारा रचित 'बन्धन' भी गांधीवादी भावनाओं को सींचता है। इन्होनें प्रसाद की ऐतिहासिक धारा को युगानुकूल मोड़ने का प्रयास किया। उन्होनें राष्ट्रीय एकता की समस्या पर प्रकाश डाला। वह कहते है कि राष्ट्रीय एकता का अभाव इस देश की सबसे बडी कमजोरी है। हरिकृष्ण जी ने जातीयता पर कडा प्रहार किया। इसीलिए डॉ0 सोमनाथ गुप्त ने उचित ही कहा, ''प्रसाद के पश्चात जो सफलता प्रेमजी को ऐतिहासिक नाटकोंमें मिली है, वह सामुहिक रूप से किसी लेखक को नहीं, उनके ऐतिहासिक नाटक हमारे राष्ट्रीय अन्दोलनों से उद्भूत भावनाओं के चित्र तो है ही साथ ही वे उस गांधीवादी आदर्शवादी परम्परा के भी प्रतिनिधि हैं जो भारत की सज्जनता, आत्मविस्तार आदि की अनुगामिनी है।'' यह नाटक एक सामाजिक नाटक है, जो पूँजीपति एवं मजदूरों के संघर्ष का चित्रण करता है। युवक मजदूर नेता मोहन मिल–मालिक राय बहादुर खजाचीराम के अत्याचारों के विरूद्ध गांधी विचारों के प्रभावाधीन अहिंसक क्रांति करता है। सारे मजदूर हड़ताल कर देते है। राय बहादुर का पुत्र प्रकाश और पुत्री मालती मोहन की सहायता करना चाहते हैं किन्तु मोहन अस्वीकार कर देता है। किन्तु अन्त में नाटककार ऐसी परिस्थितियाँ पैदा कर देता है कि राय बहादुर का हृदय परिवर्तित हो जाता है तथा वह अपनी पुत्री और मोहन को शादी के बन्धन में बान्ध देता है।

सेठ गोबिन्द दास के 'दलित कसम' नाटक में बाल–विधवा की त्रासदी पूर्वक मृत्यु का यथार्थ चित्रण है कि किस प्रकार वह बचपन में ही विधवा हो जाती है एवं समाज में उसे अनेकों प्रकार की कठनाईयों का सामना करते हुए अमानवीय अत्याचारों को सहन करना पड़ता है। उसे इतने बडे समाज में कहीं भी सिर छुपाने को जगह नहीं मिलती और सब उसकी मजबूरी का लाभ उठाना चाहता है। अन्त में वह तंग आकर आत्म हत्या कर लेती है और दुःख की बात यह है कि उसके हक़ में आवाज़ उठाने के लिए कोई नहीं होता। जहाँ यह नाटक नारी की दयनीय हालत बयां करती है वहीं इनका नाटक 'पाकिस्तान' भारत के विभाजन की त्रासदी को करूणामय ढ़ग से प्रस्तुत करता हुआ यह बताने का भरस्क प्रयास करता है कि साम्प्रदायिकता का विष देश की एकता और अखण्डता के लिए कितना अनिष्टकारी है। लक्ष्मीनारायण लाल का 'अन्धाकुँआ' नाटक भी इस श्रृंखला का एक विवेच्य नाटक है। इस नाटक में उन्होने नारी के आदर्श रूप को रेखंकित करते हुए उसके बन्धनों और अपने पति द्वारा किये जाने वाले अत्याचारों का यथार्थमयी रूप से वर्णन किया है। इस नाटक की पात्रा सका लाख कैशिशों के बाद भी अपने को पति के अत्याचारों से नहीं बचा पाती। किन्तु उसी पति को कष्ट होने पर वह पूर्णतः उस पति को समर्पित हो जाती है। इस प्रकार वह एक भारतीय नारी के उच्चदार्शों को निभाती दिखाई पड़ती है। किन्तु

वह निराश होकर कहती है,'' अन्धा कुँआ यही है, जिसके साथ मैं ब्याही गयी हूँ, जिसमें एक बार गिरी कि फिर न उभरी, न मुझो कोई निकाल ही पाया है, न मैं खुद कभी निकल पाँऊगी।'' किन्तु अन्त में उसकी सेवाभाव को देखकर उसके पति भगौती का मन बदल जाता है और उसे अपने किये पर शर्मिन्दगी अनुभव होती है। वह सत् मार्ग का अनुसरण करने लगता है। इसी लिए न कि व्यक्ति से घृणा करो बल्कि उसकी बुराईयों से घृणा करों व्यक्ति को प्रेम तथा संवेदना से सुधारा जा सकता है। यही इस नाटक का मुख्य उद्देश्य है। जो गांधीवादी विचारधारा का गहराई से अनुमूलन करता है। 'सागर–विजय' उदयशंकर भट्ट द्वारा रचित नाटक है जो भारतभूमि की रक्षा एवं शांतिपूर्वक शासन से प्रेरित है। वहीं रामावतार चेतन के नाटक 'धरती की महक' में सामाजिक पक्ष के साथ–साथ देश–भक्ति की भावना का पूर्णतः अवतरण हुआ है। इस नाटक में ग्रामीण कुरीतियों और दुर्व्यवस्थाओं को दूर करने वाले गांधीवादी विचारों पर चलने वाले एक शिक्षक का कर्म युद्ध दिखाया गया है। इसमें एक शिक्षक समाज सेवा की भावना से प्रेरित होकर नगर से गाँव में आता है। वह गाँव के लोगों को आगे लाना चाहता है, किन्तु इस कार्य में उसे जमींदारों, शाहुकारों तथा अनेकों लोगों के विरोद्ध का सामना करना पड़ता है। परन्तु गांधी अनुयायी शिवसागर, जो अशिक्षित लोग है, उनको सुधारने एवं साक्षर बनाने के लिए मेहनत करता है। गाँव में व्यसनी कुरीतियों दम्भ, आडम्बर से दबे–कुचले लोगों को सुधारने और साक्षात्कार व्यसन मुक्ति के प्रसार से ग्रामोद्धार करता है। जगदीश चन्द्र माथुर का नाटक 'बंदी' भी गाँव की दयनीय हालत को उजागर करता है तथा गाँव को 'बंदीगृह' कहा गया है। इस नाटक में दिखाया गया है कि गाँव में कैसी–कैसी विकराल समस्या अपनी जड़े मजबूत किये हुए है। भारत स्वतन्त्रता के पश्चात अशिक्षा की जो भयानक समस्या थी उसे अलग तथा आशावादी रूप से हल करने के प्रयास हम आनन्द प्रकाश जैन के नाटक 'मास्टरजी' में देख सकते हैं। मास्टरजी शीर्षक एक विशिष्ट कर्त्तव्य का अथबोध कराता है। इस नाटक में नायक गाँव के छोटे बड़े सभी लोगों को शिक्षा प्रदान करता है ताकि वह सब अपने प्रति जागरूक होकर अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाये और न्याय की रक्षा करे। इस प्रकार नाटककार ने अनपढ़ता की समस्या का साक्षात्कार करवाते हुए साक्षरता के महत्त्व को प्रतिपादित किया है।

इसके अतिरिक्त नरेन्द्र कोहली का 'शबक की हत्या', जयशंकर प्रसाद का 'जनमेजय का यज्ञ', हरिकृष्ण प्रेमी का 'शिवसाधना', लक्ष्मीनारायण लाल का 'सन्यासी' और 'सिन्दूर की होली' आदि नाटक गांधीवादी विचारधारा के प्रवाहक कहे जा सकते है। 'सिन्दूर की होली में गांधी जी के आदर्श 'कर्म प्रतिफल न्याय' में विश्वास दिखाया गया है कि व्यक्ति चाहे कितना भी प्रयत्न क्यों न कर ले किन्तु वह अपने कर्मों के फल से नही बच सकता। इसलिए उसे सत्य कर्म में लिप्त रहना चाहिए।

उपर्युक्त विवेचन से कहा जा सकता है कि आधुनिक युग के इतिहास–क्षितिज पर महात्मा गांधी का अवतरण वस्तुतः विराटत्व का अवतार था। इस विराटत्व से राष्ट्रभाषा का साहित्य कैसे अभिभूत न होता। समाज का ऐसा कोई भाग नही है जो गांधी जी के विचारों से प्रभावहीन हो। उनकी सात्विक विचारधारा का स्थाई प्रभाव अंगीकार किया गया। उनके विचार तथा भावनाएँ सर्वव्यापक एवं कालजयी है जो लम्बे समय से मानव के सद्गुणों को सिंचित करती आ रही है। शायद इसी लिए प्रत्येक भारतीय साहित्यकार ने उनसे प्रभावित होकर अपनी रचनाओं में उस युग के आन्दोलनों व स्पन्दनों को अभिव्यक्त किया है। वस्तुतः यह कहना अतिशियोक्ति नही होगा कि जब तक मानवता का अस्तित्व रहेगा गांधी जी के विचार मानवता को धर्म पथ के लिए प्रेरित करते रहेंगे।

## सन्दर्भ सूची


1. आज का हिन्दी नाटक प्रगति और प्रभाव (दशरथ ओझा, राजपाल एण्ड सन्स प्रकाशन, दिल्ली–110006)
2. हिन्दी नाटक (डॉ• बच्चन सिंह, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद)
3. नाटककार लक्ष्मीनारायण की नाट्य साधना ( नरनारायण राय, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली–110007)
4. हिन्दी के समस्या नाटक (डॉ• उमाशंकर सिंह, ऊर्जा प्रकाशन, इलाहाबाद)
5. गांधी विचारधारा का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव (डॉ• अरविन्द जोशी, कजबिहारी एचौरी एम• कॉम जवाहर पुस्तकालय, मथुरा)